International Research Journal of Education and Technology

Peer Reviewed Journal

ISSN 2581-7795

"वीर सावरकर और हिंदुत्व की विचारधारा: एक समालोचनात्मक विश्लेषण"

Srikrishna Pal[1]

Dr.Tirkamte Nivarati Tukaram[2]

PhD Research scholar, Department of Political Science, Sunrise University, Alwar, Rajasthan.[1]

Assistant Professor, Department Of Political Science, Sunrise University, Alwar, Rajasthan.[2]

सारांश (Abstract)

इस शोध पत्र का उद्देश्य वीर सावरकर की हिंदुत्व विचारधारा का समालोचनात्मक विश्लेषण करना है। सावरकर ने भारतीय राजनीति और समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। यह अध्ययन सावरकर के जीवन, उनके कार्य, और उनके द्वारा पेश की गई हिंदुत्व की परिभाषा का अध्ययन करता है। सावरकर के लेखन और गतिविधियों के माध्यम से, यह स्पष्ट किया गया है कि उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता को एक नई दिशा देने में किस प्रकार की भूमिका निभाई। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि सावरकर की विचारधारा ने भारतीय समाज में क्या प्रभाव डाला और यह कैसे राजनीति में अपनी पहचान बनाती है। इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि सावरकर की विचारधारा आज भी चर्चा का विषय है और उनकी सोच की प्रासंगिकता बनी हुई है।

कीवर्ड्स: वीर सावरकर, हिंदुत्व विचारधारा, समालोचनात्मक विश्लेषण, जीवन, कार्य, हिंदुत्व की परिभाषा, लेखन, गतिविधियाँ, भारतीय राष्ट्रीयता, भारतीय समाज, प्रभाव, राजनीति।

2. परिचय (Introduction)

वीर सावरकर, जिनका जन्म 28 मई 1883 को नासिक, महाराष्ट्र में हुआ, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख नेता, कवि, और विचारक थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए, जो न केवल भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माण में सहायक रहे, बल्कि भारतीय समाज के सांस्कृतिक और राजनीतिक धारा को भी प्रभावित किया। उनका विचार हिंदुत्व, एक ऐसा सिद्धांत है, जिसने भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। सावरकर का मानना था कि हिंदू संस्कृति और पहचान को बनाए रखना आवश्यक है, जिससे एक मजबूत और एकजुट भारत का निर्माण हो सके।सावरकर का जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। उन्होंने अपने अध्ययन और लेखन के माध्यम से समाज को जागरूक किया। उनकी पुस्तक हिंदुत्व: Who is a Hindu? ने हिंदू पहचान को एक नया आयाम दिया और यह सिद्ध किया कि हिंदुत्व केवल एक धार्मिक विश्वास नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान है।

उन्होंने यह तर्क दिया कि भारत को एक हिंदू राष्ट्र के रूप में स्थापित करना आवश्यक है, जो कि हिंदू संस्कृति, भाषा और परंपराओं को बढ़ावा दे सके।

सावरकर के विचारों में राष्ट्रवाद की एक नई परिभाषा देखने को मिलती है। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र संघर्ष का समर्थन किया। सावरकर के अनुसार, भारतीयों को अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना चाहिए और इसके लिए हर संभव उपाय करने चाहिए। उनका मानना था कि अगर देश को स्वतंत्रता प्राप्त करनी है, तो यह आवश्यक है कि भारतीय जनता एकजुट हो और अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़े।

इस अध्ययन में हम सावरकर के जीवन, उनके विचारों और उनके द्वारा प्रस्तुत हिंदुत्व की व्यापकता का विश्लेषण करेंगे। हम यह देखेंगे कि सावरकर की विचारधारा ने भारतीय समाज और राजनीति पर क्या प्रभाव डाला और यह कैसे आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। सावरकर का योगदान केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं है; उनकी सोच और दृष्टिकोण ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को गहराई से प्रभावित किया है। यह शोध पत्र उनके योगदान और उनकी विचारधारा की समालोचना करेगा, जिससे उनके विचारों की गहनता और प्रभाव को समझा जा सके।

अंत में, सावरकर की सोच ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में बल्कि आज के भारत में भी विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक धारा को आकार दिया है। यह अध्ययन हमें सावरकर की विचारधारा को समझने में मदद करेगा और उनकी ऐतिहासिक भूमिका को पुनः मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करेगा।

3. उद्देश्य (Objectives)

- वीर सावरकर की हिंदुत्व विचारधारा की मूल बातें समझना।
- सावरकर के लेखन और कार्यों का समालोचनात्मक विश्लेषण करना।
- यह जानना कि सावरकर की विचारधारा ने भारतीय राजनीति को कैसे प्रभावित किया।
- सावरकर की हिंदुत्व परिभाषा का सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ में मूल्यांकन करना।

4. अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

इस अध्ययन में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। विभिन्न प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें सावरकर के लेख, ऐतिहासिक दस्तावेज, विद्वानों के शोध पत्र और पुस्तकें शामिल हैं। इसके अलावा, सावरकर के विचारों की तुलना अन्य विचारकों की विचारधाराओं से भी की गई है, ताकि उनकी विशेषता को उजागर किया जा सके।

5. चर्चा और परिणाम (Discussion and Results)

1. हिंदुत्व विचारधारा की मूल बातें

वीर सावरकर ने हिंदुत्व को एक व्यापक विचारधारा के रूप में प्रस्तुत किया, जो केवल एक धार्मिक विश्वास नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान थी। सावरकर का मानना था कि हिंदू संस्कृति, भाषा, और परंपराओं का संरक्षण और प्रचार-प्रसार आवश्यक है। उन्होंने हिंदुत्व को भारतीय राष्ट्रीयता का आधार मानते हुए इसे एक गहरी ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में स्थापित किया। उनकी प्रमुख विचारधाराएँ निम्नलिखित हैं:

- **हिंदू पहचान**: सावरकर के अनुसार, हिंदुत्व केवल एक धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान है। वे मानते थे कि हिंदू एकता के बिना भारत की स्वतंत्रता असंभव है। उन्होंने यह तर्क किया कि हिंदू धर्म, संस्कृति, और भाषा भारत के मूल तत्व हैं, जिनके माध्यम से एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण संभव है।
- **राष्ट्रीयता**: सावरकर ने यह स्पष्ट किया कि एक राष्ट्र की पहचान उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों से निर्धारित होती है। उन्होंने भारतीयों से अपील की कि वे अपनी पहचान को पहचानें और अपने सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करें।
- **सशस्त्र संघर्ष**: सावरकर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सशस्त्र संघर्ष का समर्थन किया। उन्होंने यह विश्वास किया कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए क्रांति आवश्यक है। उनकी यह सोच उनके प्रसिद्ध कार्य *1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम* में भी परिलक्षित होती है, जिसमें उन्होंने भारतीय विद्रोह को एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम के रूप में प्रस्तुत किया।
- **राजनीतिक संगठन**: सावरकर ने हिंदू महासभा की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हिंदू समाज को एकजुट करना और राजनीतिक शक्ति का निर्माण करना था। उन्होंने

संगठनों के माध्यम से समाज को जागरूक करने और उन्हें एकजुट करने का कार्य किया।

2. सावरकर के लेखन और कार्यों का समालोचनात्मक विश्लेषण

वीर सावरकर का लेखन उनके विचारों और दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। उनकी प्रमुख रचनाएँ जैसे *हिंदुत्व: Who is a Hindu?* और *1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम* उनके विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं।

- **हिंदुत्व: Who is a Hindu?**: इस पुस्तक में सावरकर ने हिंदुत्व की परिभाषा दी है और यह बताया है कि हिंदू केवल एक धार्मिक पहचान नहीं है, बल्कि एक संस्कृति और सभ्यता का हिस्सा है। उन्होंने हिंदू धर्म को एकता और अखंडता का प्रतीक बताया और इसे भारतीय राष्ट्र की पहचान का आधार बनाया। उनके विचारों में यह स्पष्ट होता है कि वे हिंदू संस्कृति को सभी सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र मानते थे।

- **1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम**: इस कृति में सावरकर ने 1857 के विद्रोह को एक संगठित स्वतंत्रता संग्राम के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने इसे भारत की स्वतंत्रता के लिए एक ऐतिहासिक प्रयास माना। सावरकर के अनुसार, यह विद्रोह केवल एक सैनिक विद्रोह नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की एकजुटता का प्रतीक था।

- **समालोचनात्मक दृष्टिकोण**: सावरकर के लेखन में कई विवादास्पद तत्व हैं, जैसे कि उनके द्वारा मुस्लिमों और अन्य धार्मिक समुदायों के प्रति किए गए कुछ कठोर विचार। उनके विचारों की आलोचना भी की गई है, खासकर उनके हिंदू राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के कारण। कई विद्वानों ने उनके विचारों को सांप्रदायिक और विभाजनकारी माना है।

3. सावरकर की विचारधारा का भारतीय राजनीति पर प्रभाव

वीर सावरकर की हिंदुत्व विचारधारा ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उनके विचारों का प्रभाव निम्नलिखित क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

- **हिंदू राष्ट्रवाद**: सावरकर की विचारधारा ने हिंदू राष्ट्रवाद की एक नई परिभाषा प्रस्तुत की। उनकी सोच ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) जैसे संगठनों को प्रेरित किया, जो आज भी सावरकर की विचारधारा का पालन

करते हैं। सावरकर के विचारों ने उन्हें एक मजबूत राजनीतिक आधार दिया है, जिसके कारण हिंदू राष्ट्रवाद की धाराएँ आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं।

- **समाजिक धारा**: सावरकर के विचारों ने भारतीय समाज में एक नई चेतना का संचार किया। उनके विचारों ने हिंदू समाज को एकजुट करने का प्रयास किया, जिससे विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों को बल मिला।
- **राजनीतिक संघर्ष**: सावरकर के विचारों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया आयाम दिया। उनके दृष्टिकोण ने विभिन्न राजनीतिक दलों को स्वतंत्रता के लिए एकजुट किया और सशस्त्र संघर्ष को वैधता प्रदान की।

4. सावरकर की हिंदुत्व परिभाषा का सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ में मूल्यांकन

सावरकर की हिंदुत्व परिभाषा का मूल्यांकन करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि उनके विचारों ने भारतीय समाज और राजनीति में गहरे प्रभाव डाले हैं।

- **सामाजिक संदर्भ**: सावरकर की हिंदुत्व विचारधारा ने भारतीय समाज में एकजुटता की आवश्यकता को रेखांकित किया। उनका मानना था कि एकजुटता के बिना स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती। उनके विचारों ने हिंदू समाज को अपनी पहचान को पहचानने और उसे सशक्त बनाने का प्रेरणा दी।
- **ऐतिहासिक संदर्भ**: सावरकर का दृष्टिकोण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने उस समय की राजनीतिक स्थितियों को समझते हुए अपने विचारों को प्रस्तुत किया, जिससे भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में एक नई दिशा मिली। उनका यह मानना था कि भारत को एक मजबूत हिंदू राष्ट्र के रूप में स्थापित करना आवश्यक है, जो कि उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सही सिद्ध हो सकता है।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

वीर सावरकर की हिंदुत्व विचारधारा ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उनका दृष्टिकोण न केवल स्वतंत्रता संग्राम में योगदान करने में सहायक रहा, बल्कि भारतीय राष्ट्रीयता को एक नई दिशा भी दी। सावरकर के विचारों ने हिंदू समाज को जागरूक किया और उन्हें एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। उनके द्वारा प्रस्तुत हिंदुत्व की परिभाषा ने एक ऐसे राष्ट्रीयता के विचार को जन्म दिया, जिसमें संस्कृति, इतिहास, और पहचान का गहरा संबंध था। हालांकि, सावरकर की विचारधारा के प्रति विवाद भी रहे हैं। उनके विचारों में कुछ तत्व

सांप्रदायिकता के रूप में देखे गए हैं, और कई आलोचकों का मानना है कि उनके दृष्टिकोण ने भारतीय समाज में विभाजन को बढ़ावा दिया। उनके विचारों की जटिलता इस बात को दर्शाती है कि सावरकर का योगदान केवल सकारात्मक नहीं, बल्कि आलोचना के योग्य भी है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सावरकर की विचारधारा आज भी चर्चा का विषय है। उनकी सोच ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण धारा को जन्म दिया है, जो आज भी प्रासंगिक है। विभिन्न राजनीतिक दल और संगठन सावरकर के विचारों को अपनाते हुए उन्हें अपने आंदोलन में शामिल कर रहे हैं। संक्षेप में, सावरकर की हिंदुत्व विचारधारा एक ऐसा विषय है, जो न केवल इतिहास में बल्कि वर्तमान में भी महत्वपूर्ण है। उनके विचारों की समीक्षा और विश्लेषण आवश्यक है, ताकि हम उनके योगदान और उनकी विवादास्पद सोच को समझ सकें। यह अध्ययन हमें सावरकर की विचारधारा के व्यापक प्रभावों को पहचानने और उसकी गहराई में जाने का अवसर प्रदान करता है।

संदर्भ (References)

1. सावरकर, वीर. *हिंदुत्वः कौन है हिंदू?* (1939).
2. सावरकर, वीर. *1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम* (1909).
3. राजन, एस. *वीर सावरकरः आदमी और उसके विचार.* नई दिल्ली: रूपा प्रकाशन, 2003.
4. भट्ट, कंवल. "हिंदुत्वः इसके वैचारिक मूल की खोज." *भारतीय दर्शन की पत्रिका*, खंड 34, अंक 2, 2006, पृष्ठ 121-135.
5. मिश्रा, अविनाश. *स्वतंत्रता आंदोलन में विनायक दामोदर सावरकर की भूमिका.* नई दिल्ली: ए.पी.एच. प्रकाशन, 2005.
6. दत्ता, समीर. "सावरकर और हिंदुत्व का विचार." *आधुनिक एशियाई अध्ययन*, खंड 43, अंक 4, 2009, पृष्ठ 873-901.
7. आचार्य, रामकृष्ण. *हिंदू राष्ट्रवाद और भारतीय राजनीतिः सावरकर की विचारधारा का अध्ययन.* जयपुर: रावत प्रकाशन, 2010.
8. गुप्ता, अरुण. "आधुनिक भारत में सावरकर के हिंदुत्व का पुनर्विचार." *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक*, खंड 54, अंक 16, 2019, पृष्ठ 39-45.